ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 138-139

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानियों में भाभी और देवर–ननद का संबंध

काकानि श्रीकृष्ण

असि0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, नागार्जुन नगर, गुटुर (आन्ध्र प्रदेश) भारत

Received- 01.12.2019, Revised- 05.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: kakanikrishnaanu@gmail.com

सारांश : *विवाह पश्चात् लड़की मात्र किसी की पत्नी नहीं रहती, बल्कि नये–नये संबंध भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। वस्तुतः परिवार तो संबंधियों का एक समूह है, संयुक्त परिवार में भाई–बहन, माता–पिता, सास–बहू, भाभी–देवर–ननद आदि सभी के अपने कर्तव्य हैं। हमारे भारतीय समाज में भाभी–देवर–ननद का रिश्ता सहज हृदस–परिहास का है। तुलसी ने 'रामचरित मानस' में भाभी–देवर के रिश्ते को इस परिहास से अछूता रखा है। लक्ष्मण सीता को माता की तरह पूज्य मानते हैं। एक सेवक की तरह उनकी दृष्टि सीता के चरणों पर ही टिकी रहती है। फलतः वे सीता के पैरों के आभूषण की पहचान कर पाते हैं।*

कुंजी शब्द – कर्त्तव्य, भारतीय समाज, रिश्ता, हृदसा परिहास, सेवक, आभूषण, पूज्य, चरण, प्रेतात्मा, विधि यातना

कभी–कभी इन संबंधों में कलह के बीज का वपन भ हो सकता प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में इन संबंधों के रूपों का चित्रण किया है। प्रेमचन्दोतर कहानियों में भी इन संबंधों का अनदेखा नहीं किया गया है।

'प्रेतात्मा' कहानी में भाभी–ननद के रिश्ते में प्रीति नहीं है, जिसकी जिम्मेदार सास है। बहू लक्ष्मी की वह नाना विधि यातना और प्रताड़ना देती है। इस यातना में तब और अभिवृद्धि हो जाती है जब लक्ष्मी की विधवा ननद का आगमन होता है। ननद अपनी माँ का पक्ष लेती है। ननद भाभी के बाल खींचती है और सास लात–जूतों से उसकी खबर लेती है।"

'तीसरी कसम, अर्थात् मारे गये गुलफाम' के नायक हिरामन की भी एक भाभी है। हिरामन भाभी की बोली ढ़ोली से डरता है। अतः वह सिनेमा, वायस्कोप नहीं देखता है। भले मनुष्य की तरह कार्य से छुटकर सीधा घर की राह पकड़ता है। भले में आकर जब हिराबाई हिरामन को नाच देखने के लिए पास देती है तो सर्व प्रथम वह अपने मित्रों से कहता है –"हाँ पहले गुरू–कसम खानी होगी सभी को, कि गाँव–घर में यह बात एक पंछी भी न जान–पाये।" भाभी हिरामन से परिहास पनहीं रकती है। माँ की तरह आदेश देती है यही कारण है कि "हिरामन भाई से बढ़कर भाभी की इज्जत करता है। भाभी से डरता है भी।" भाभी दहेजू हिरामन के लिए भी कुमारी लड़की की खोज में है। "भाभी की जिद्द कुमारी लड़की से ही हिरामन की शादी करवायेगी।"

'जबरदस्ती' कहानी में देवर–भाभी के मध्य सहज मित्रवत् व्यवहार है, अतः देवर अपने मित्रों से भी भाभी का परिचय करवाता है। देवर ने कहा –"यह मजदूरों के लीड़र हैं। जेल से आ रहे हैं। शाम को इन्हें लेक्चर भी देना है। खूब खातिर करना ताकि खूब बकें और फिर आराम से जेल कांटे।"

फणीश्वरनाथ 'रेण' की 'ठेस' कहानी में दो भाभियों का चित्रण है। बड़ी भाभी अपने देवर एवं ननद की प्रिया हैं – अपने मधुर व्यवहार के कारण मंझली भाभी मुँहजोर है। ननद (मानू) के ससुराल के लिए सिरचन सुन्दर इन्द्रधनुशी रंग से चिक बना रहा है, उसके भाई केलिए इतनी सुन्दर चिक नहीं बन सकती है अतः वह चुपने रह सकी। परदे की आड़ से बाले–पहले एसो जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चिक बनाती है तो भैया को खबर भेज देती।" इसके विपरीत बड़ी भाभी को खेद होता है यह देखकर कि मानू की चिक अधूरी रह गई अधूरी चिक मैझालर यह भी बेजा नही दिखलाई पड़ता, क्यों मानू। मानू कुछ नहीं बोली।

भाभी–देवर–ननद में कटुता तभी उत्पन्न होती है जब भाभी की इच्छा के विपरीत या ननद का व्यवहार होता है। जब बहू को पराये घर का स्वीकार कर ननद और देवर माँ का पक्ष ग्रहण करते हैं तब स्थिति और भी विशम हो जाती है। उषाप्रियंवदा ने 'वापसी' में इस स्थिति से भिन्न चित्रण किया है। समवयस्क होने से 'भाई–भाभी', देवर–ननद सभी की विचारधारा एक जैसी है। माता–पिता ही पीढ़ी के अन्तर के फल स्वरूप अलग–अलग प्रतीत होते हैं। सभी आधुनिकता के रंग में रंगें हैं। कार्य को उपेक्षा की दृश्टि से देखना एवं मौज मस्ती के आलम में जीवन व्यतीत करता ही उना ध्येय है। फलतः घर की परिस्थितियों से विरोध जब गजा घर बाबू दूसरी नौकरी पर चले जाते हैं। सभी बहुत प्रसन्न होते हैं एवं आजादी की सांसा का अनुभव करते हुए सिनेमा का प्रोग्राम बनाते हैं – "उनके जाने को बाद सब अन्दर लौट आये, तो बहूने अमर से पूछा, सिनेमा

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

ले चलिएगा? बसन्ती ने उछल कर कहा – भइया हमें भी।"

यशपाल ने 'मंगला' शीर्षक कहानी में मंगला के देवर का चित्रण किया है जो रूग्ण हो जाता है। भाभी (मंगला) देवर के जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है –"राम जी देवर का दुःख दूर करो चाहे मेरी जाने ले लो। मेरे देवर को चंगा कर दो।"

ननद और भाभी के संबंधों मं तनाव का कारण प्रतिदून्दिूता ननद को महसूस होता है कि भाभी व्याहता ननद को अपने परिवार का अंग नहीं समझती यही टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। उषाप्रियंवदा की कहानी पैरम्ब लेटर' में भाभी कालिन्दों और ननद रानी में नहीं पटती है। रानी पारिवारिक कलह को जागृत करने में आहुति देती है। सास का लिन्दी की जली–कही बातें सुनाती है और रानी अपनी माता का पक्ष लेकर उसके हौसले बढ़ाती है। मृतक बच्ची को जन्म देकर कालिन्दी दुःखी है। नाते रिश्ते दार लोग सहानुभूति दिखाकर पाप ही कहा। ऐसे समय में ननद का यह कथन है–"अरे अम्मा हम भला बात–बच्चों की क्या ममता जाने? इनकी तो सारी बातें निराली हैं।" रानी अपने बेटे के लिए कालिन्दी का पैरम्बुलेट ले जाना चाहती है। कालिन्दी के इन्कार करने पर घर में बवंडर उठ खड़ा होता है। अपने व्यंग्य–बाण से रानी अपनी भाभी का हृदय छलनी कर देती है।

ननद के पति भाभी की बेरूखी भी ननद को दुखित करने के लिए पर्याप्त है। 'दृष्टि दोष' की चन्द्रा अपनी बड़ी ननद के आने पर अपने पिता के यहाँ चली जाती है। दुखित ननद अपने भाई से कहती है–"भैया तुम अपनी बहू को ले आओ, मैं कल चली जाऊँगी।" चन्द्रा शादी में भी अपने भाई के साथ मंसूरी चली जाती है। मानों उसे इन लोगों से कुछ भी लेना–देना नहीं है। 'वापसी' की ननद अपनी भाभी की खुशामद में लगी रहती है। अतः दोनों के संबंधों में कटुता नहीं है। पिता गजाघर बाबू की उपेक्षा वह भी करती है। माँ कहती है –"बहू कोई रोक–टोक न थी, बसन्ती को भी वही अच्छा लगता था।" प्रेमचन्दोतर युग में महिला कथाकारों ने पारिवारिक–जीवन का यथा तथा एवं पूर्ण स्वाभाविक चित्रण किया है। डॉ. कंचन लता सब्बरवाल की कहानी 'चार वर्ष' में पारिवारिक चक्की के मध्य पिसती बहू का चित्रण है, जो अपने ससुराल की मान प्रतिष्ठा के लिए अपनी सर्वस्व अर्पण के बावजूद अन्त में लाचार, बेबस अबला ही बनी रहती है। ननद के ब्याह के लिए नीलिमा अपने अभूषणों को भी त्याग कर देती है। "माँ सब कुछ मिलकर ही तो बारह हजार लेंगे। तुम बाबूजी से कहकर बात पक्की कर लो सात–आठ हजार के तो मेरे गहने ही जायेंगे।" दरअसल उसने अपनी माता से अच्छे स्वभाव को संस्कार के रूप में ग्रहण किया है। फलतः "ननद भाभी को घर रहना चाहती थी, और देवरतों किसी न किसी बहाने भाभी के पास डटे रहना चाहते थे।"

नीलिमा के हृदस में भी मात्र कर्तव्य भावना ही नहीं बल्कि उन सबों के लिए प्यार और स्नेह है। देवर के बीमार पड़ने पर ईश्वर से मनौतिया करती है। पति को डाक्टर लाने केलिए भेजती है। अर्थाभाव में गृहस्थी की गाड़ी घिसट रही है। डाक्टर को पीस देने के लिए पैसे नहीं है। एसी विकट परिस्थिति में नीलिमा हिम्मत नहीं हारती है–"नीलिमा ने धीरे–धीरे कानों से सोने के टप्स निकालकर पति के सम्मुख रखकर कहा–"भगवान पर भरोसा रखो। जाओ, डाक्टर को बुला लाओं 'दो पहले' में मिस्टर सेन ने अपने पुत्र वैभव और मर्यादा के मध्य जीवन की कटुता को भूल चुके थे। गरीबी जो जीवन दूसरा पहलू है उनसे अछूता रह गया है। अचानक अपनी भाभी की फुटपाथ पर भूखों नगों के बीच देकर उनकी मानवता जागृत हो जाती है। वे संबंधों को नकार नहीं पाते–मिस्टर सेन भूल गये अपना पद मर्यादा और निस्सीम वैभव। क्षण मात्र में।" वे भिखारिन सम्मुख थे, उन गन्दे मृत प्राय नर–कंकाली के बीच। उन्होंने कहा–भाभी, भाभी!

भिखारिन चौंक उठी। लज्जा छिपाने का उसके पास वस्त्र नहीं थे। इसके साथ ही वह उस स्थिति में पहुँच गई थी जहाँ लज्जा छिपाने की आवश्यकता नही होती। मिस्टर सेन ने पहचान ने में देर कर दी थी। उसकी दृष्टि शून्य हो चुकी थी। धन कुबेर देवर मिस्टर सेन ने की गोद में उसका मृत शरीर झूल गया था। संबधों के दायरे टूट रहे हैं। इसके बावजूद मानवता अभी समाप्त नहीं हुई है।

मस्तिक के ऊपर कभी–कभी हृदय होता ही है। इस तरह प्रेमचन्दोतर कहानियों में भाभी और देवर–ननद के संबंधों को कहा नीकारों ने सुन्दर ढंग से स्पष्ट किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डायरी के नीरस पृष्ठ, इलाचन्द्र जोशी, पृ.सं. 147
2. ठुमरी, फणीश्वरनाथ 'रेणु', पृ.सं. 132, 111, 54
5. ज्ञानदान, यशपालख पृ.सं. 85
8. कहानी विविधा, संपादक डॉ. देवीशंकर अवस्थी', पृ.सं. 171
9. जिन्दगी और गुलाब के फूल, उषा प्रियंवदा, पृ.सं. 13
10. जिन्दगी और गुलाब के फूल, उषा प्रियंवदा, पृ.सं. 15, 132, 150
12. जिन्दगी और गुलाब के फूल, उषा प्रियंवदा, पृ.सं. 150
13. भूख, डॉ. कंचनलता सब्बरवाल, पृ.सं. 54, 46, 47,

*****